अभ्युदय

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
परिपत्र

वर्ष - 13 अंक - 03 जून 2013

गुरु वाणी

- जन्म लेना एक नियति है। जिसका जन्म होता है, उसमें इस जन्म का पुरुषार्थ नहीं होता। जन्म लेना कोई बड़ी बात नहीं, संसार की एक सामान्य घटना है। जीवन कैसे जीया जाता है, इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जीने का समय कितना मिला, कितना मिलेगा और वह जीवन कैसा होगा, ये प्रश्न कई बार मानस में उभरते हैं। कई दीर्घजीवी होते हैं तो कई अल्पजीवी होते हैं। हमारे धर्मसंघ में सौ पार करने वाले कम ही मिलेंगे। हमारे आचार्यों और साधु-साध्वियों ने अभी तक सौ वर्ष पार नहीं किया है। श्रावक समाज में भी सौ वर्ष का आयुष्य पाने वाले नगण्य हुए हैं। दीर्घ जीवन की प्राप्ति महत्त्वपूर्ण है, पर उससे भी महत्त्वपूर्ण है पवित्र जीवन। **अल्प जीवन भी महत्त्वपूर्ण बन सकता है, बशर्ते कि जीवन पवित्र हो।**
- हमारा जीवन शरीर और आत्मा का योग है। केवल शरीर और केवल आत्मा जीवन नहीं, दोनों के संयोग का नाम जीवन है। शरीर और आत्मा का यह संबंध स्थायी नहीं होता। सभी कलाओं में जीने की कला श्रेष्ठ है। व्यक्ति को उसे सीखना चाहिए। श्वास आता है और जाता है, यह जीवित होने का लक्षण है, किन्तु यह सामान्य बात है। शरीर अस्थायी है और आत्मा स्थायी है। शरीर के लिए खाना, पीना, सोना आदि कितने कार्य किए जाते हैं तो यह भी ध्यातव्य है कि स्थायी आत्मा के लिए क्या किया जा रहा है? अस्थायी की भी अपेक्षा है, किन्तु स्थायी की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। **व्यक्ति जीने की कला सीख ले तो जीवन कलापूर्ण बन सकता है और वह शरीर और आत्मा दोनों के लिए लाभप्रद बन सकता है।**
- हमारी दुनिया में शक्ति का बहुत महत्त्व है। शक्तिहीन व्यक्ति की स्थिति दयनीय होती है। व्यक्ति को अपनी शक्ति की पहचान करनी चाहिए, उसका विकास करना चाहिए और प्राप्त शक्ति का सदुपयोग करना चाहिए। पुरुषार्थ एक ऐसी शक्ति है, जिसका मूल्यांकन होना चाहिए। जीवन में भाग्य का अपना स्थान है, किन्तु कुछ करने के लिए, बनने के लिए पुरुषार्थ अपेक्षित है। पुरुषार्थ का सिद्धान्त बहुत महत्त्वपूर्ण है। नियति, भाग्य आदि जानने-समझने योग्य हैं, किन्तु भाग्य के भरोसे ही नहीं बैठे रहना चाहिए। जो भाग्य के भरोसे बैठ जाता है, उसे मैं अभागा कहना चाहूंगा। मेरा तो इस संदर्भ में यह भी सोचना है कि देववाद में भी ज्यादा नहीं जाना चाहिए। जो काम हम स्वयं कर सकते हैं, उसके लिए देवों को कष्ट क्यों दिया जाए? पुरुषार्थ करणीय होता है, किन्तु वह भी दुर्भाग्यशाली है जो गलत कार्यों में अपने पुरुषार्थ का नियोजन करता है। **व्यक्ति को विवेकपूर्ण सत्पुरुषार्थ करना चाहिए। यह सफलता का एक मंत्र है।**
- हमारा पुरुषार्थ किसी को कष्ट देने के लिए नहीं, अपना और दूसरों का कल्याण करने के लिए होना चाहिए। केवल अपने लिए कुछ करना सामान्य बात होती है, दूसरों के कल्याण के लिए कुछ करना विशेष बात होती है। पुरुषार्थहीनता अभिशाप है। वे व्यक्ति दुनिया के तुच्छ प्राणी हैं, जिनमें पराक्रम की भावना नहीं होती। आलस्य के वशीभूत सक्षम व्यक्ति भी सत्पुरुषार्थ न करे तो वह माहात्म्य को कैसे प्राप्त कर सकेगा? **व्यक्ति को अपनी शक्ति का सदुपयोग करते हुए विवेकपूर्ण सत्पुरुषार्थ करना चाहिए।**
- यदि मंत्र को मित्र बना लिया जाए तो वह हमेशा साथ रह सकता है। विभिन्न धर्मों में विभिन्न मंत्र निर्दिष्ट हैं। जैन धर्म में 'नमस्कार महामंत्र का जो महत्त्वपूर्ण स्थान है, वह अर्थपूर्ण प्रतीत होता है। यह एक प्रकार से असाम्प्रदायिक मंत्र है। वीतरागता इसकी आत्मा है। इसमें पंच परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है। अर्हत् और सिद्ध वीतराग होते हैं। आचार्य वीतराग अथवा वीतरागता की साधना करने वालों का नेतृत्व करने वाले होते हैं। उपाध्याय वीतराग वाणी के अध्येता होते हैं। साधु वीतराग अथवा वीतरागता की साधना में संलग्न होते हैं। वीतरागता के प्रति भक्ति भावना और साथ में वीतरागता की साधना हो तो कर्मों के भार से मुक्त बना जा सकता है। इस प्रकार नमस्कार महामंत्र का जप बहुत पुनीत प्रयोग है। **ऐसे मंत्र को अपना मित्र बनाकर जप किया जाए और वीतरागता की साधना की जाए तो हमारी आत्मा श्रेय की ओर गति कर सकती है।**

– आचार्य महाश्रमण

आचार्य श्री महाश्रमण जन्मोत्सव-दीक्षोत्सव-पट्टोत्सव अभ्यर्थना-अभिवंदना

अलख जगाने अनुकंपा की, चरण तुम्हारे हैं गतिमान।
ज्योतिपुंज के ज्योतिवलय से ज्योतिर्मय हो सकल जहान।।

— साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

- आचार्यप्रवर का जीवन व व्यक्तित्व जितना हमारे सामने है, उससे अधिक अज्ञात है। आचार्य बने आपको तीन वर्ष हुए हैं, पर उसकी पृष्ठभूमि में बहुत साधना है। आप बचपन से ही तीक्ष्ण बुद्धि से संपन्न थे। आपने वैरागी अवस्था में मिनट टु मिनट अपनी दिनचर्या बनाई। आपके समय प्रबंधन को देखकर सब चकित हैं। यह कला आपको बचपन से ही हस्तगत थी। प्रबंधन पुस्तकों में वर्णित लीजेंड व्यक्तित्व के सात गुणों या विशेषताओं की चर्चा करते हुए महाश्रमणीजी ने कहा-'बड़े व्यक्तित्व रिश्तों की कला में पारंगत होते हैं। आपमें अभिव्यक्ति का कौशल है, ऊर्जस्विता, कार्य करने की शक्ति व आस्थाबल है। अपने गुरु के प्रति, लक्ष्य व सिद्धान्त के प्रति आपमें गहरी श्रद्धा है। आपमें कार्य करने का जज्बा है। आप कभी परिस्थिति के अधीन नहीं होते। आपकी स्थितप्रज्ञता गजब की है।

- साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

- जन्मदिवस व्यापक रूप में उसी का मनाया जाता है, जो अपने कर्तृत्व से समाज, देश, मानव जाति व प्राणीमात्र के लिए कल्याण का कार्य करता है। आपश्री ने अपने तीन वर्ष के शासनकाल में सबका दिल जीतने का कार्य किया है। आचार्यप्रवर की दृष्टि के अनुरूप कार्य चल रहा है, यह उनकी दृष्टि का प्रभाव है। दायित्व ग्रहण के बाद आपमें अतिशय प्रकट हुआ है। आपके शिष्य-शिष्याएं आपके मृदु संकेतों को आगम पाठ मानकर उसे अपना जीवनसूत्र बना लेते हैं, यह आपका अतिशय है। इस अतिशय में अनवरत अभिवृद्धि होती रहे, आपकी क्षमता बढ़े, आपका श्रम सार्थक बने, आपका पुरुषार्थ चलता रहे, आपके हर स्वप्न संकल्प में बदलकर साकार बनें, मात्र धर्मसंघ का ही नहीं, जैन समाज व पूरी मानव जाति को प्रलंबकाल तक आपका मार्गदर्शन मिलता रहे, यही अभीप्सा है।

- मंत्री मुनि सुमेरमल

- पूज्य आचार्यप्रवर ने तीन वर्ष पूर्व तेरापंथ धर्मसंघ के नेतृत्व की कमान संभाली। नेतृत्व वही कर सकता है, जो अच्छा शिष्य रह चुका होता है। मैंने आचार्यप्रवर को मुनि, महाश्रमण व युवाचार्य के रूप में देखा। हर स्थिति में आपका शिष्यत्व मुखर रहा। अच्छा शिष्य अच्छा गुरु हो सकता है और अच्छा गुरु अच्छा नेतृत्व देने में सक्षम होता है। अच्छा शिष्य बने बिना सम्यक् श्रद्धा व सर्वात्मना समर्पण भाव आना कठिन होता है। अध्यात्म व व्यवहार का समन्वय करना भी नेतृत्व की कसौटी है। नेतृत्व देने वाले के लिए आध्यात्मिक होने के साथ-साथ व्यवहार के धरातल पर चलना भी आवश्यक होता है। आचार्यप्रवर एक सफल नेतृत्वप्रदायक हैं।

- मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभा

अध्यक्षीय

- गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी ने तीन प्रकार के व्यक्ति बतलाये – 1. आत्महित साधक, 2. परहित साधक व 3. उभयहित साधक। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष व महासभा शताब्दी वर्ष में आचार्य श्री महाश्रमणजी की कृपादृष्टि से लगभग समाज की सभाओं में जाने का व शताब्दी वर्ष से सम्बन्धित बात रखने का अवसर प्राप्त हुआ। मुझे तीनों प्रकार के व्यक्तियों को देखने का व समझने का अवसर प्राप्त हुआ है। मैं अपने निर्धारित कार्यक्रमानुसार एक क्षेत्र में पहुंचा। समाज के प्रतिष्ठित कार्यकर्ता अपनी कार लेकर मुझे लेने पहुंचे। मैंने सोचा इतना बड़ा क्षेत्र व अकेले व्यक्ति ही कैसे आये ? गाड़ी में बैठकर उन्होंने अपनी कर्मजा शक्ति से अर्जित गाड़ी, भवन, रिसोर्ट आदि की चर्चा कर अपने वैभव्य का प्रदर्शन किया। मेरे कान यह सब सुनने को तैयार नहीं थे, मैं चाहता था कि मेरे साथ कार में बैठे महानुभाव तेरापंथ सभा में आध्यात्मिक गतिविधियों की, अपने द्वारा संघ व समाज में प्रदत्त योगदान की व आज के कार्यक्रम की चर्चा करें। आतिथ्य सत्कार के लिए मुझे उनके घर लेकर गये वहां पर भी घर में कौन सा मार्बल लगा है, लाईटें कहां से मंगवाई हैं, फर्नीचर कहां से तैयार करवाया है उसकी चर्चा करने लगे तो मेरे से रहा नहीं गया तब मैंने प्रश्न किया कि आपने अपने लिए, परिवार के लिए, ख्याति प्राप्त करने के लिए बहुत कुछ किया, आप यह बतायें कि आपने समाज व संघ के लिए क्या किया है, मेरा प्रश्न सुनते ही वे अवाक् रह गये, उन्होंने कहा इसके लिए तो कुछ नहीं किया। मेरे मुंह से सहज ही निकल गया, अगर आपने संघ व समाज के लिए कुछ नहीं किया तो मेरी दृष्टि में यह आपका केवल प्रदर्शन मात्र है। मेरी मान्यता है कि जिस संघ व समाज में हम जीवन जी रहे हैं, आध्यात्मिक पथदर्शन प्राप्त कर रहे हैं उसके लिए हमारे भीतर दायित्व का बोध होना जरूरी है। मेरा समाज के प्रत्येक वर्ग से अनुरोध है कि वे संघ व समाज के प्रति अपने दायित्व को समझकर उसके विकास में हर पल सर्वात्मना समर्पित रहें।

- महासभा शताब्दी वर्ष व आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष में समाज के सभी सभा भवनों का नवीनीकरण, रंग–रोगान हो यह एक महत्वपूर्ण योजना है जिसे समय–समय पर समाज के सामने प्रस्तुत किया गया है। हमें पूरा विश्वास है कि सभी सभा भवनों ने कार्य प्रारम्भ कर दिया होगा। 6 जून, 2013 को मैं यशवंतपुर तेरापंथ सभा भवन, बेंगलोर के भवन नवीनीकरण के उद्घाटन समारोह में उपस्थित था। मैंने 15 माह पूर्व के सभा भवन को देखा था, उसी सभा भवन को आज देखकर आश्चर्य के साथ कार्यकर्ताओं की चिंतन शक्ति व कार्य दक्षता के प्रति गौरव की अनुभूति हुई। तेरापंथ समाज यशवंतपुर के लिए सामाजिक व आध्यात्मिक गतिविधियों के सुसंचालन के लिए एक व्यवस्थित भवन का नवीनीकरण कराकर समाज के सामने अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष का प्रथम चरण 5 नवम्बर, 2013 सन्निकट है, अणुव्रत संकल्प पत्रों के माध्यम से हमें हमारा लक्ष्य प्राप्त करना है। सभी केन्द्रीय संस्थाओं ने अपनी शाखाओं के लिए एक लक्ष्य निर्धारित किया है, आशा है सभी कार्यकर्ताओं ने सलक्ष्य इस अभियान के क्रियान्वयन में सक्रियता से कार्य प्रारम्भ कर दिया होगा। मेरा समाज के प्रत्येक भाई–बहिन से अनुरोध है कि हम इस अभियान में सहयोगी बनकर प्रणम्य महापुरुष आचार्य तुलसी के शताब्दी वर्ष में अपना योगदान दें।

- महासभा द्वारा प्रकाशित जैन भारती (मासिक) डॉ. शान्ता जैन के सम्पादकीय में नियमित पठनीय सामग्री के साथ प्रकाशित हो रही है। महासभा शताब्दी वर्ष, आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष से सम्बन्धित सामग्री का समय–समय पर प्रकाशन हो रहा है। प्रत्येक परिवार में जैन भारती पहुंचे ऐसा हमारा लक्ष्य है। तेरापंथ सभाओं के पदाधिकारीगण महासभा शताब्दी वर्ष व आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष में सलक्ष्य प्रयत्न करें तो हमें विश्वास है कि हम लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। अभी मुम्बई तेरापंथ सभा ने 100 जैन भारती के सदस्य बनाकर इस कार्य को गति प्रदान की है, उनके प्रति आभार।

- महासभा शताब्दी वर्ष में आगामी 11, 12, 13 अगस्त, 2013 श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में सभी तेरापंथी सभाओं के प्रतिनिधि उपस्थित होकर अपने दायित्व का निर्वहन करे यह अनुरोध है।

समाज के प्रत्येक सदस्य के सक्रिय सहयोग का आकांक्षी. . .

– हीरालाल मालू

सम्पादकीय

- 'मेरा मन प्रसन्न है, मेरी आत्मा स्वस्थ है, शरीर थोड़ा अस्वस्थ है पर वो मुझ पर हावी नहीं हो सकता। मेरी इच्छा शक्ति, मनोबल शक्ति और पुरुषार्थ प्रबल है। मैं हार नहीं मान सकता। मुझ पर मेरे गुरु का जबर्दस्त साया है। मैं स्वयं उच्च चरित्र में विश्वास करता हूँ। अनवरत गतिशीलता में विश्वास करता हूँ, अनुशासन प्रिय हूँ और आत्मानुशासित हूँ। संसार की कोई भी शक्ति मुझे मेरी गतिशीलता से नहीं रोक सकती।'

– आचार्य तुलसी

- बंधुओं! आचार्य तुलसी द्वारा अपने लिये लिखी गयी ये पंक्तियां इस सत्य को और अधिक पुष्ट आधार प्रदान करती हैं कि जिस व्यक्ति में अपनी शक्तियों की इतनी स्पष्ट पहचान हो, इतना सशक्त आत्म विश्वास हो, इतना सघन समर्पण हो वो ही युग प्रवर्तक बनने का अधिकारी है। जागृत आध्यात्मिक चेतना की पराकाष्ठा पर आरूढ़ निरंतर प्रवर्धित होती तेजस्विता के स्फुर्लिगों से समावृत्त, अप्रमत्त आत्मस्थ असाधारण मानव ही मंजिलों को प्रिय होते हैं। पृथ्वी की पूरी परिधि में भी उनके सुकृत समा नहीं पाते। आचार्य तुलसी का विराट अमिट व्यक्तित्व व पवित्र आभवलय इस सत्य की पुनरावृत्ति करता है।

- समय चाहे कितना ही निष्ठुर क्यों न हो जाये, संसार चाहे कितना भी नश्वरता का बोध कराये पर वो हमारे गुरु को हमसे नहीं छीन सकता। आज 16 साल हो गये। शरीर से भले ही वो दूर हो गये परंतु वो नहीं है, यह अहसास कभी नहीं हुआ। वक्त हार गया. . . . . .

- कहते हैं कि गुरु के अनमोल बोल संजीवन देतें है। आज उनके एक-एक शब्द की प्रतिदिन अनुप्रेक्षा की जाये तो गुणात्मकता से घनीभूत संघीय शौर्य और औदार्य उनके सृजनशील स्वप्नों का यथार्थ बन जायेगा। हे! गुरुवर तुम्हारी ये मुस्कुराती आंखें और आशीर्वाद की मुद्रा में उठा तुम्हारा ये वरद् हस्थ हम सब का सम्बल है – अनुग्रह करो! वर वरो! कि तुम्हारी जन्म शताब्दी का एक अनूठा इतिहास रच पायें।

- बंधुओं! आप सबके बढ़ते कदमों के साथ 'अभ्युदय' की यात्रा भी गतिशील है। आपका अनवरत सहयोग, उत्साहवर्धन उपयोगी सुझाव इस परिपत्र के परिष्कार में सहयोगी बने हैं। यह परिपत्र महासभा और तेरापंथी सभाओं के बीच का मजबूत सेतु है। इसकी मजबूत कड़ी के रूप में मिल रहे आप सबके सौहार्द के प्रति अभ्युदय परिवार तहे दिल से आभारी है। आप सबसे मिल रहे सहयोग ने इस विश्वास को और अधिक बल दिया है कि अपनों का साथ हो तो हर पल मंगलमय और हर मुश्किल आसान हो जाती है। इसीलिये आप सबके अनवरत सहयोग की अपेक्षा है।

- मैं कुछ ऐसे व्यक्तित्वों का उल्लेख करना भी चाहूंगी जिनके उन्नत विचारों ने हमारे 'अभ्युदय परिवार' को नई कर्मजा शक्ति से ऊर्जावान बनाया। श्री पदमचन्द पटावरी (राजसमंद), श्री सुरेन्द्र बोरड़ (कोलकाता), श्रीमती कनक बरमेचा (सूरत), श्री दशरथमल भंडारी (जोधपुर), श्री सवाईलाल पोखरना (फतेहनगर), श्री जयप्रकाश गादिया (चिकमंगलूर), श्री स्वरूपचन्द दांती (बालोतरा), श्री बसंत छाजेड़ (बल्लारी), डॉ. शान्ता जैन (लाडनूं), श्री बजरंग सेठिया (सिलीगुड़ी), श्री धर्मचन्द लूंकड़ (चैन्नई), श्री सुकनराज परमार (चैन्नई), श्री मोतीलाल बाफना (बेंगलोर), श्री रंगराज सुराणा (रानी), डॉ. बी. एल. शर्मा (सिरीयारी), श्री विमल सामसुखा (बेंगलोर), श्री कीर्ति बोरड़िया (भीलवाड़ा), श्री निर्मल रांका (कोयम्बटूर), श्रीमती सरोज टांटिया (बेंगलोर), श्री अभयराज कोठारी (बेंगलोर), श्रीमती सरोज पारख (बेंगलोर), श्रीमती पुष्पा कर्णावट (उदयपुर), श्रीमती सूरज बरड़िया (कोलकाता), श्री कैलाश कोठारी (शोलापुर), श्री सुरेश कोठारी (गदग), श्रीमती लता जैन (बेंगलोर), श्री पन्नालाल पुगलिया (जयपुर), श्रीमती सोभाग बैद (जयपुर)।

- आईये पौरुष दीप कुछ ऐसे जलायें कि आचार्य श्री महाश्रमणजी की कुशल अनुशासना में महासभा के साथ-साथ आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी की समस्त योजनाओं की सफलता हित अपनी सम्पूर्ण शक्ति समर्पित कर पायें।

पुनः पुनः आभार भावों के साथ. . .

– वीणा बैद

भारत के उत्तर-पूर्वी प्रान्त स्तरीय संगठन यात्रा

अपनों के बीच-अपनों की बात

- 'यात्रा' मंजिल दर मंजिल निरंतर गतिशीलता की सूचक है और जब यह यात्रा व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर सामाजिक संगठन की सशक्तता के विशेष लक्ष्य से की जाती है तो आपसी जुड़ाव के साथ संगठन की गुणवत्तता संवर्धन एवं आत्म तोष की मिठास के सुफल प्रदान करती है, उस पर गुरुप्रवर की शुभ दृष्टि सोने पे सुहागा बन जाती है।

- महामना आचार्य श्री महाश्रमणजी की शुभ दृष्टि प्राप्त कर दिनांक 9 जून, 2013 से लेकर 16 जून, 2013 तक की अष्ट दिवसीय 'उत्तर पूर्वी प्रान्तीय संगठन यात्रा' का आयोजन महासभा अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू की अध्यक्षता में किया गया। महासभा के महामंत्री श्री बिनोद कुमार चौरड़िया, उपाध्यक्ष श्री किशनलाल डागलिया, सहमंत्री श्री बजरंग कुमार सेठिया एवं महासभा कार्यसमिति सदस्य श्री उत्तमचन्द नाहटा, श्री निर्मल दुधोड़िया, श्री शान्तिलाल खटेड़, श्री मूलचन्द बैद एवं श्री आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी कार्यकारिणी सदस्य श्री दिलीप दुगड़ के दायित्व पूर्ण सत्पुरुषार्थ का विशेष सहयोग इस यात्रा को सफल बनाने में योगभूत बना। इस पूरी यात्रा में श्री विमल ओस्तवाल (धुबड़ी), श्री मनोज लूणिया (शिलांग), श्री रणजीत मालू (गुवाहाटी) व श्री बुद्धमल बैद (सिलचर) से प्राप्त सहयोग को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता।

- गौरवानुभूति के साथ श्री सुरेश गोयल (गुवाहाटी) की संघ निष्ठा से महासभा पदाधिकारी आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता से अभिभूत हो गये। जन्मना तेरापंथी न होकर भी आचार्यप्रवर की संभावित असम यात्रा के दौरान उनका चार माह तक गुरु चरणों की सेवा उपासना का लाभ लेने का संकल्प समर्पित श्रावकत्व की दिशा में उभरते सौभाग्य का परिचायक है।

- शिलांग-मेघालय, अगरतल्ला-त्रिपुरा, नौगांव-असम, जोरहाट, तेजपुर, लखीमपुर, खारूपेटिया, बरपेटा रोड़, बंगाईगांव, बंगाई गांव (साऊथ), बासुगांव, अभयपुरी, कोकड़ाझाड़, बिलासीपाड़ा, धुबड़ी, गौरीपुर, गोलपाड़ा, किसनाई, सिलचर, करीमगंज व गुवाहाटी आदि क्षेत्रों की यात्रा सफलता के साथ सम्पन्न हुई।

- प्रत्येक क्षेत्र में संघ एवं संघपति के प्रति अटूट आस्था व समर्पण देखकर महासभा अधिकारी अभिभूत थे। एक तरफ गर्मी का भयंकर प्रकोप व दूसरी तरफ नये-नये क्षेत्रों में समाज के प्रत्येक वर्ग द्वारा आदरपूर्वक अपनत्व भाव। थकान का आना स्वाभाविक था किन्तु क्षेत्र में कार्यकर्ताओं के साथ श्रावक समाज का अद्भुत उत्साह नई स्फूर्ति का संचार कर रहा था।

- जिस उद्देश्य के साथ यात्रा आरम्भ हुई, गुरुवर के आशीर्वाद से संगठन की दृष्टि से, आध्यात्मिक कार्यक्रम की दृष्टि से, सामंजस्य की दृष्टि से प्रभावी रही है। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष की परियोजनाओं की जानकारी प्राप्त कर सभी भाई-बहिनों ने सहभागी बनने की भावना अभिव्यक्त की।

- सभाओं में संविधान के अनुरूप चुनावी गतिविधियां, सहभागिता योजना, मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना, आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष की जानकारी के साथ तेरापंथी परिवारों में पारिवारिक सामंजस्य को पुष्ट करने का विशेष प्रशिक्षण देने का प्रयास महासभा पदाधिकारियों द्वारा किया गया।

- प्रत्येक सभा में महासभा द्वारा निर्मित आचार्य तुलसी कैलेण्डर की एक-एक प्रति भेंट की गई व अपने क्षेत्र के प्रत्येक तेरापंथी परिवार में इसे पहुंचाने की प्रेरणा भी प्रदान की गयी साथ ही '**जनगणना अभियान**' के अंतर्गत फॉर्म भी वितरित किये गये।

- इन यात्राओं में ऐसे कई क्षेत्रों में जाना हुआ जहां महासभा के पदाधिकारी या कार्यकर्ता इन वर्षों में नहीं गये हैं, अत: विशेष उत्साह व प्रफुल्लता का वातावरण देखने को मिला।

महासभा संवाद्

- जिस प्रकार समाज के प्रत्येक वर्ग का सहयोग प्राप्त हो रहा है उससे ये विश्वास और अधिक सबल हुआ कि गुरुदेव की कृपा से आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी ऐतिहासिक व आध्यात्मिक होगी व भारत के उत्तर पूर्व की यह यात्रा निश्चय ही धर्मसंघ के विकास की दृष्टि से ऐतिहासिक साबित होगी। इस यात्रा को आचार्यप्रवर की अनुकम्पा से श्रावक समाज ने बहुत ही महत्व दिया। सम्पूर्ण यात्रा की सफलता का श्रेय श्रीचरणों में समर्पित करते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रहें हैं।

- महासभा की इस महत्वपूर्ण यात्रा के प्रत्येक पड़ाव पर छोटी से छोटी तेरापंथी सभा ने बड़े ही उदार हृदय से आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के लिये सहभागिता की घोषणा कर अनुकरणीय उदाहरण संघ के समक्ष प्रस्तुत किया है। महासभा परिवार अपनी ऐसी समर्पित सहयोगी संस्थाओं के सहयोग के प्रति आभारी है।

- **शिलांग** सभाध्यक्ष श्री बाबूलाल सुराणा व श्री सभा मंत्री श्री कमल किशोर गोलछा, **नौगांव** सभाध्यक्ष श्री बजरंग लाल नाहटा, **जोरहाट** सभाध्यक्ष श्री अनोप दुगड़ व मंत्री श्री देवचन्द बैद, **तेजपुर** सभाध्यक्ष श्री उगमचन्द बैद, **लखीमपुर** सभाध्यक्ष श्री भीखमचन्द बुच्चा, **खारूपेटिया** सभाध्यक्ष श्री धनपत दुगड़, **बरपेटा रोड़** सभाध्यक्ष श्री शुभकरण बोथरा, **बंगाईगांव** सभाध्यक्ष श्री अनिल सुराणा व मंत्री श्री प्रदीप बैद, **साऊथ बंगाईगांव** सभाध्यक्ष श्री अमृतलाल दुगड़, **कोकड़ाझाड़** सभाध्यक्ष श्री किशनलाल मेहता व मंत्री श्री दिलीप सेठिया, **बिलासीपाड़ा** सभाध्यक्ष श्री ताराचन्द सिंघी व मंत्री श्री बच्छराज सेठिया, **धुबड़ी** सभाध्यक्ष श्री अभयचन्द बुच्चा व मंत्री श्री अनूपचन्द सेठिया, **गौरीपुर** सभाध्यक्ष श्री मोहनलाल नोहर व मंत्री श्री विजयसिंह चौरड़िया, **गोलपाड़ा** सभाध्यक्ष श्री बाबूलाल छाजेड़ व मंत्री श्री महेन्द्र सुराणा, **किसनाई** सभाध्यक्ष श्री जीवनमल धाड़ेवा व मंत्री श्री अनिल डोसी, **सिलचर** सभाध्यक्ष श्री पूनमचन्द मालू व मंत्री श्री प्रदीप सुराणा, **करीमगंज** सभाध्यक्ष श्री पूनमचन्द बोथरा व मंत्री श्री प्रकाशचन्द दफ्तरी, **अगरतल्ला** सभाध्यक्ष श्री चम्पालाल गिड़िया व मंत्री श्री हीरालाल छाजेड़, **गुवाहाटी** सभाध्यक्ष श्री सुमेरमल सुराणा व मंत्री श्री प्रदीप नाहटा, **ढ़ेकियाझूली, सप्तग्राम, बसुगांव** एवं **अभयपुरी** सहित **सभी क्षेत्रों के कर्मठ कार्यकर्ताओं व सभी संघीय पदाधिकारियों की सहयोगपूर्ण भावना व श्रद्धालु श्रावक-श्राविका समाज की अधिकाधिक सहभागिता यात्रा की सफलता का मुख्य आधार बनी।**

विशेष ध्यातव्य

सुसंस्कार निर्माण का सुन्दर अवसर

राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर

दिनांक 6 अक्टूबर से 12 अक्टूबर 2013, जैन विश्व भारती, लाडनूं

- जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में 6 अक्टूबर से 12 अक्टूबर 2013 तक आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य एवं निर्देशन में समाज के 13 से 19 वर्ष के बालक-बालिकाओं के संस्कार निर्माण के लिए **राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर जैन विश्व भारती लाडनूं में आयोजित किया जा रहा है।**
- राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर का मुख्य उद्देश्य है कि समाज के नौनिहालों को सुसंस्कारी बनाना। आचार्य श्री महाश्रमणजी ने बालोतरा के विशाल शिविर की सफलता को देखकर संघ की भावी पीढ़ी के शुभ भविष्य को निहारते हुए अपने श्रीमुख से फरमाया कि ऐसे संस्कार निर्माण शिविर वर्ष में एक बार नहीं, अपितु बार-बार लगने चाहिये।
- करुणासागर आचार्य श्री महाश्रमणजी का मन्तव्य है कि ''बालपीढ़ी में यदि संस्कारों का बीजारोपण हो जाता है तो वे आगे चलकर संघ व समाज के सुयोग्य नागरिक बनकर अपने सुकृत्यों से दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं।'' शिविर में व्यवस्थित दिनचर्या के अन्तर्गत विभिन्न कक्षाओं के माध्यम से जीवन जीने की कला सिखाई जाती है।
- इस बहुआयामी, बहुपयोगी शिविर में आप अपने क्षेत्र के नौनिहालों को सुसंस्कारों से आप्लावित करने, उनके समुज्ज्वल भविष्य निर्माण के लिए जीवन में संस्कारों की अर्हताओं के विकास के लिए व संघ शिरोमणि आचार्य श्री महाश्रमणजी के तेजस्वी मुख मंडल पर छलक आती सहज निश्च्छलता व वात्सल्य पूरित नयनों से झरते अमृत का पान करने के लिए अपने क्षेत्र के बालक-बालिकाओं को ज्यादा से ज्यादा संख्या में भेजकर अपने दायित्व का निर्वहन करें, ऐसा विनम्र अनुरोध है।

विशेष ध्यातव्य

''राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर'' : मुख्य बिन्दु

1. शिविरार्थियों की आयु सीमा 13 से 19 वर्ष निर्धारित की गई है।
2. लाडनूं शिविर स्थल तक शिविरार्थियों को लाने-लेजाने की व्यवस्था अभिभावकों की रहेगी।
3. दिनांक 6 अक्टूबर 2013, रविवार, प्रात: 9.00 बजे से शिविर का शुभारम्भ है, अत: दिनांक 5 अक्टूबर 2013, शनिवार की शाम तक पहुंचने का प्रयास करें तथा अपना रजिस्ट्रेशन उद्घाटन से पूर्व कार्यालय में करवा देंवे।
4. शिविर शुल्क प्रति शिविरार्थी 300/- रुपये रखा गया है।
5. लाडनूं में शिविर स्थल पर पहुंचने के बाद सम्पूर्ण व्यवस्था (नि:शुल्क) आयोजन समिति, महासभा व प्रवास व्यवस्था समिति, लाडनूं की रहेगी।
6. छात्र व छात्राओं के लिए शिविर में ठहरने व शिक्षण की अलग-अलग व्यवस्था रहेगी।
7. शिविर के लिए आवेदन फॉर्म सभाओं को प्रेषित किये जा चुके हैं। आप अपने क्षेत्र के बालक-बालिकाओं से फॉर्म भरवाकर संयोजक महोदय के पास दिनांक 30 अगस्त, 2013 तक अवश्य भिजवा देंवे ताकि आगे की सभी व्यवस्थाएं समुचित रूप से सुनिश्चित की जा सके।
8. शिविर समापन 12 अक्टूबर 2013, शनिवार, सायं 4.00 बजे होगा।
9. संप्रेषित फॉर्म से ज्यादा शिविरार्थी होने पर फॉर्म का जेरॉक्स करवा लेंवे। शिविर में शिविरार्थी की दैनिक दिनचर्या, कार्यक्रम एवं प्रतियोगिता सम्बन्धित जानकारी शीघ्र ही संप्रेषित कर रहे हैं।
10. शिविर सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी सहयोगी संस्थाओं, युवक परिषद्, महिला मंडल एवं ज्ञानशाला के पदाधिकारियों को अवश्य करवायें।
11. शिविरार्थियों के साथ आने वाले अभिभावकों की व्यवस्था स्वयं की शिविर स्थल से अलग रहेगी।
12. शिविर में स्वेच्छा से अपनी सेवायें प्रदान करने वाले कार्यकर्त्ता भाई, कार्यकर्त्ता बहिनें अपनी योग्यता के साथ संयोजक के पास अपना नाम 31 जुलाई, 2013 तक प्रेषित करावें। राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर की कोई भी जानकारी शिविर संयोजक श्री भूपेन्द्र कुमार मूथा से प्राप्त करें। सम्पर्क सूत्र : +91 98454 46057

★ अणुव्रत संकल्प पत्र

- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी में आचार्य श्री महाश्रमणजी ने अणुव्रत संकल्प पत्र में पूरे देश से सहभागिता का एक लक्ष्य हमारे सामने प्रस्तुत किया। इस संकल्प को पूरे देश में तेरापंथी सभाओं के माध्यम से व अन्य केन्द्रीय संस्थानों के माध्यम से प्रसारित किया गया। 5 नवम्बर, 2013 हमारे सामने है, इस अवसर पर निर्धारित लक्ष्य की संपूर्ति करने का हम सभी का सामूहिक दायित्व है।
- अणुव्रत संकल्प पत्र के क्रियान्वयन की दिशा में जो प्रगति हुई वह अणुव्रत संकल्प पत्रों के साथ अविलम्ब महासभा के कोलकाता कार्यालय में भिजावें ताकि 22-23 जून की बैठक में इस परियोजना की व्यवस्थित प्रस्तुति की जा सके।
- समय-समय पर दूरभाष व एसएमएस से आपका प्रगति विवरण जानने का प्रयास किया गया है, जिन-जिन क्षेत्रों व केन्द्रीय संस्थाओं ने अभी तक प्रगति विवरण नहीं भेजा है कृपया इसे आवश्यक समझकर क्रियान्वयन करावें।
- इसके पश्चात् 15 दिनों के भीतर हुई प्रगति विवरण फॉर्म भी भिजवायें ताकि अणुव्रत नियम संकल्पकर्ता से भी संपर्क स्थापित किया जा सके।
- जिनके संकल्प पत्र हमें प्राप्त हो गये हैं उन अणुव्रतियों को अनुमोदना पत्र भेजे जा रहे हैं।
- इस संदर्भ में विशेष जानकारी हेतु अणुव्रत संकल्प पत्र प्रभारी श्री प्रकाशचन्द सुराणा, कोलकाता से सम्पर्क करें ।
  सम्पर्क सूत्र :-+91 98311 03321

लक्ष्य निश्चित हो, पांव गतिशील हों,
तो मंजिल कभी दूर नहीं होती ।
- आचार्य तुलसी

आभारी हैं हम आपके

महासभा की विभिन्न प्रवृत्तियों में अनुदान की राशि निम्नलिखित अनुदानदाताओं से अथवा उनके सद्प्रयासों से प्राप्त हुए।

(दिनांक 11 मई 2013 से 10 जून 2013 तक प्राप्त अनुदान राशि)

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह

11,00,000/–	श्री कन्हैयालाल बोथरा, इस्लामपुर
11,00,000/–	श्री धनराज घासीराम बरबेटा परिवार, रतलाम
7,00,000/–	श्री उत्तमचन्द नाहटा, नौगांव
3,00,000/–	श्री रामगोपाल प्रवीण कुमार जैन, केसिंगा
3,00,000/–	श्री सम्पतलाल मादरेचा, मुम्बई
2,00,000/–	श्री भरत सिंघी, हैदराबाद
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तिरूवत्तूर
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, अहमदाबाद पश्चिम
1,00,000/–	तेरापंथ महिला मंडल, केसिंगा
1,00,000/–	श्री राजेन्द्र कुमार यश कुमार सेठिया, रायपुर
1,00,000/–	श्रीमती बादामबाई मोहनलाल सेठिया, पुणे
1,00,000/–	श्री तुलसीराम गुलाबचन्द बुच्चा, पुणे
1,00,000/–	श्री प्रकाशचन्द झमकलाल भंडारी, पुणे
1,00,000/–	श्री नानालाल छाजेड़, मुम्बई
1,00,000/–	श्री तेरापंथ समाज, विक्रोली–मुम्बई
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हैदराबाद
50,000/–	श्री घीसूलाल बोहरा, चैन्नई

स्मारक स्थल

51,000/–	श्री रतनलाल जिन्दल, नाभा
25,000/–	श्री प्रकाशचन्द कोठारी, रायपुर
20,000/–	श्री सोहनलाल विमल कुमार जैन, मालेगांव
5,000/–	श्री सोहनलाल अग्रवाल (जैन), इन्दौर

महासभा की विविध गतिविधियों हेतु

25,000/–	श्री नरेन्द्र कुमार दुगड़, रायपुर
11,000/–	श्री अमरचन्द बरड़िया, कोलकाता

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष एवं महासभा शताब्दी वर्ष भवन निर्माण योजना

20,00,000/–	श्री राकेश कुमार भरत कुमार नाहटा, किराड़ाबाड़ा–कोलकाता

सहभागिता योजना

68,050/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी (क्षेत्रीय) सभा, सरदारपुरा
51,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बाजीपुरा
18,700/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, आरकोणम

सहभागिता योजना के अन्तर्गत एकत्रित कुल राशि 1,37,750 रुपये में से 1,03,725 रुपये की राशि महासभा को प्राप्त हुई है।

संघ पुरुष - चिरायु हो! चिरायु हो!

- **उपशम सारं खलु श्रामण्यं** का साक्षात् स्वरूप, तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी का जन्मोत्सव, दीक्षा उत्सव, पट्टोत्सव चतुर्विध धर्मसंघ ने बड़े ही उल्लासमय वातावरण में विशाल समारोहों के रूप में आयोजित किया, अप्रमत्त जीवन की ज्योत को, उनके सुकुमार चिन्तन को, उनकी उदार मनोवृत्ति को, उनकी करूणा की अमाप्य गहराई को प्रगाढ़ श्रद्धा के साथ प्रणाम किया तथा उनकी वीतरागता को तीर्थंकर भगवान की गरिमा और महिमा के साथ अपने हृदय कमल में प्रतिष्ठापित कर गौरव के साथ सात्विक प्रफुल्लता से स्वयं को भावित किया।
- मां नेमा का लाल आज तेरापंथ का भाल बनकर चमक रहा है। इस दृष्टि से बैसाख का महीना कितना सौभाग्यशाली है? जिसने अपने समय के इस रत्न को नित्य नई (चमक) ऊंचाईयां प्रदान कर उसे अनमोल बना दिया, मानो समय ने इस रत्न की दुर्लभता को बहुत पहले ही भांप लिया हो।
- आचार्य श्री महाश्रमणजी की अमृतस्रावणी वाणी में आर्हत् वाङ्मय प्रवचन संजीवन बन नव जागरण का शंखनाद कर रहा है। मनुष्यत्व का मोल व महान् पुरुषों के माहात्म्य को समझने की सामर्थ्य भर रहा है और शक्ति दे रहा है इस दुर्लभ मानव जीवन को सार्थक दिशा में गतिमान करने की।
- **अनुकम्पा की अलख जगाने वाले संघ पुरुष को अनन्य कृतज्ञ भावों से प्रणाम! कण-कण संघ पुरुष चिरायु हो! चिरायु हो! के अमृत भाव मिश्रित शब्दों से गुंजायमान है - जिसके साक्षी बने हैं ये क्षेत्र :-**
- **भट्टा बाजार -मधुबनी —** साध्वीश्री प्रमिलाकुमारीजी के सान्निध्य में नशा मुक्ति के संकल्पों के साथ आयोजन भव्यता के साथ आयोजित हुआ व मेयर श्रीमती कनीज रजा साहिबा ने अणुव्रत स्तम्भ व अणुव्रत द्वार बनाने की घोषणा कर इस अवसर को यादगार बना दिया। सभा मंत्री श्री नवरतनमल दुगड़ द्वारा यह जानकारी हमें प्राप्त हुई।

- **रामा मंडी —** कालांवाली, भटिण्डा, मनसा व रामा मंडी के श्रावक श्राविका समाज की विशाल उपस्थिति में मुनिश्री विजयकुमारजी ने गुरु महाश्रमण का विराट जीवन चरित्र व महत्वपूर्ण घटनाओं को विस्तार से प्रस्तुत कर श्रद्धा भक्ति की धारा बहा दी। श्री आशु बंसल द्वारा यह विज्ञप्ति हमें प्रेषित की गई।

- **चैन्नई —** साध्वीश्री कंचनप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ विद्यालय पट्टालम में समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में आयोजित भाक्तिपूर्ण समारोह में सौम्य मुद्रा, शीतल आभा मंडल, निगर्वित, निस्पृह व अपूर्व मेधा सम्पन्न आचार्य श्री महाश्रमणजी के विराट व्यक्तित्व की विशद् व्याख्या की गई। सभा मंत्री श्री तनसुखलाल नाहर द्वारा यह विज्ञप्ति हमें उपलब्ध करायी गयी।

- **बालोतरा —** मुनिश्री मदनकुमारजी के सान्निध्य में आयोजित समारोह में मुनिश्रीजी ने अनेकों ऐतिहासिक उदाहरणों के माध्यम से छोटीवय में दिक्षित व्यक्ति के विकास की अनन्त संभावनाओं के पर्याप्त अवसर की प्रेरणा जन मानस में जगायी। महातपस्वी तेजस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी का जीवन इसकी उत्कृष्ट मिसाल है। श्री स्वरूपचन्द दांती द्वारा प्रेषित विज्ञप्ति द्वारा हमें यह जानकारी प्राप्त हुई।

- **शालीमार बाग, दिल्ली —** सभाध्यक्ष श्री अजय जैन द्वारा प्राप्त जानकारी के आधार पर अष्टगणी संपदा से सुशोभित आचार्यप्रवर के जन्म दिवस व पट्टोत्सव का भक्तिमय कार्यक्रम दिल्ली महानगर के उपनगर रोहिणी, पीतमपुरा, कीर्तिनगर, मॉडल टाऊन, पश्चिम विहार, अशोक विहार, सिविल लाईन आदि क्षेत्रों से समागत श्रावक समाज की उपस्थिति में साध्वीश्री यशोमतीजी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। गुरु अर्भ्यथना के स्वरों का जोश श्रद्धा विनय व समर्पण की त्रिवेणी में जन मानस को अभिस्नात् कर रहा था।

- **मोमासर —** शासनश्री मुनिश्री वत्सराजजी के सान्निध्य में आयोजित समारोह में आचार्य तुलसी महाप्रज्ञजी की अनुपमेय कृति आचार्य श्री महाश्रमणजी की अर्चा में अपने अहोभाग्य की अनुभूति करते हुए दिव्य गुणों से दीप्त गुरुवर के पावन चरणों में संघीय विकास की उज्ज्वल संभावनाओं को अभिव्यक्ति दी गयी। श्री राकेश संचेती द्वारा प्रेषित विज्ञप्ति से हमें यह जानकारी उपलब्ध हुई।

- **तेजपुर** — संघीय संस्थाओं ने जागरूकता के साथ समारोहपूर्वक आचार्य श्री महाश्रमणजी को वर्धापित किया तथा इस अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा रचित पुस्तक 'विजयी बनो' तेजपुर के संपूर्ण तेरापंथ समाज तक पहुंचाकर उल्लेखनीय कार्य किया। श्री दिलीप दुगड़ द्वारा प्रेषित विज्ञप्ति हमारी जानकारी का आधार बनी।

- **प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा** — परिसर के शान्त व सुरम्य वातावरण में मुनिश्री धर्मेशकुमारजी के पावन सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम पूरे अहमदाबाद के श्रद्धालु श्रावक समाज एवं समस्त संघीय संस्थाओं (अहमदाबाद) की सक्रिय सहभागिता से अनुशासन प्रिय, दूरदर्शी, सफल प्रबंधनकर्ता एवं सफल समन्वयक आचार्य श्री महाश्रमणजी की गुणोत्कीर्तना के सम्मिलित स्वरों की आगाज का मजबूत आधार बना। अध्यक्ष श्री बाबूलाल सेखानी सहित गणमान्य व्यक्तियों की एक लम्बी कतार कार्यक्रम की गतिशीलता को प्रवर्धमान कर रही थी।

- **वर्धमान** — चिन्मय चेतन की मुस्कान का नाम है – आचार्य श्री महाश्रमण। प्रसन्नता के प्रासाद का अभिषेक व सर्वात्मना समर्पण भावों से ओत:प्रोत गरिमामय समारोह साध्वीश्री अणिमाश्रीजी, साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में आयोजित किया गया जिसमें कोलकाता, दुर्गापुर, रानीगंज, चासबोकारो आदि अनेक क्षेत्रों के श्रद्धालु भाई-बहिनों ने मौन रहकर व मुखर बनकर अपने गण देवता को श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित किया।
- महासभा के महामंत्री श्री बिनोद कुमार चोरड़िया सहित कोलकाता व वर्धमान क्षेत्र के समर्पित कार्यकर्ताओं की सक्रिय सहभागिता कार्यक्रम की महिमा को और अधिक संवर्धित कर रही थी।

- **परवत पाटिया** — साध्वीश्री काव्यलताजी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में आचार्य श्री महाश्रमणजी को भारतीय ऋषि परम्परा के सशक्त हस्ताक्षर के रूप में उपमित करते हुए वर्धापित किया गया। समणी मधुरप्रज्ञाजी की विचार प्रस्तुति के साथ साध्वीश्री ज्योतियशाजी का सशक्त संचालन प्रभावी बना।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा - गंगावती

उत्तर कर्नाटकवासी बने भाग्यवान - धर्म चेतना बनी वर्धमान — गदग चातुर्मास करने के लक्ष्य से गतिमान साध्वीश्री संगीतश्रीजी ने आध्यात्मिक परिवेश को पुष्ट करते हुए कड़प्पा, गुंटकल, बल्लारी, कंपली, गंगावती आदि क्षेत्रों में अल्पकालीन प्रवास में भी जनमानस में धार्मिक लगन व उत्साह की ज्योत को और अधिक ज्योतिर्मान किया।

- महावीर जयंती, आचार्य महाप्रयाण दिवस, अक्षय तृतीया, सास बहू शिविर, चित्त समाधि शिविर, संस्कार निर्माण शिविर व तत्वज्ञान कक्षाओं का सफल आयोजन इसके साक्षी है।
- साध्वीश्रीजी की रास्ती की सेवा में भी आरकोणम्, तिरूपति, गदग, कंपली, गंगावती, कड़प्पा, गुंटकल, बल्लारी के श्रद्धालु समाज ने अपनी सक्रियता दिखायी। जो सभी के लिये प्रेरणादायी है।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा - भादरा

नोहर चातुर्मास प्रवेश से पूर्व साध्वी श्री स्वर्णरेखाजी का भादरा प्रवास संघीय संस्कारों को पुष्ट बनाने में लाभप्रद सिद्ध हो रहा है। तत्वज्ञान का प्रशिक्षण, विभिन्न प्रतियोगिताएं व संघीय कार्यक्रम भादरा में आध्यात्मिक जागृति में सहायक बन रहे हैं।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा - बेंगलोर

युवा दिवस के रूप में समायोजित - आचार्य श्री महाश्रमण दीक्षा दिवस

दो-दो महाप्रतापी आचार्यों की कमनीय कृति - आचार्य श्री महाश्रमण — हनुमंतनगर बेंगलोर में साध्वीश्री कुंथुश्रीजी के सान्निध्य में आयोजित इस विशिष्ट समारोह में जनमेदिनी का उल्लास व गुरु गुणोत्कीर्तना का उच्छवास अपने चरमोत्कर्ष पर था।

- इस अवसर पर साध्वीश्री कुंथुश्रीजी ने आचार्य श्री महाश्रमणजी को वीतराग पुरुष के रूप में प्रतिष्ठापित करते हुए वर्धापित किया।
- समणी निर्देशिका डॉ. निर्वाणप्रज्ञाजी ने महातपस्वी, महामनीषी आचार्य श्री महाश्रमणजी के पारदर्शी चिंतन को नमन करते हुए अभ्यर्थना अभिव्यक्ति दी।

- श्री मूलचन्द नाहर ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। साध्वीश्री सुलभयशाजी ने युवा दिवस के उपलक्ष्य में युवकों को प्रतिबोध दिया। समणी मध्यस्थप्रज्ञाजी ने 'उज्ज्वल शासना तेरी' गीत का संगायन किया। साध्वीश्री कंचनरेखाजी व साध्वीश्री सुमंगलाजी की भक्तिमय प्रस्तुति में गुरु समर्पण भावों का प्रकर्ष परिलक्षित था।
- मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने आचार्य श्री महाश्रमणजी का समय प्रबन्धन एवं विनम्रता का उदाहरण देकर भाव विभोर कर दिया। विशिष्ट अतिथि श्री घेवरचन्द सिंघी श्री वर्धमान स्थानकवासी, श्री एल. ए. सुब्रह्मण्यम, विधायक-हनुमंतनगर, श्री संघ श्री वेंकटेश कारपोरेटर, श्री सोमशेखर पुलिस इंस्पेक्टर हनुमंतनगर, श्री हेमराज सामसुखा, यशवंतपुर सभा मंत्री श्री गौतम मूथा सहित संघीय संस्थाओं के सम्मानित पदाधिकारियों ने भी विभिन्न विधाओं में अपनी भावभीनी भावनायें प्रस्तुत कर कार्यक्रम को गति प्रदान की।
- कार्यक्रम के कुशल संचालन का उत्तरदायित्व महासभा के सहमंत्री श्री भूपेन्द्र कुमार मूथा ने बड़ी सक्षमता से निभाया। सभाउपाध्यक्ष श्री धर्मचन्द धोका ने आभार प्रकट किया।

★ **नवीनीकृत तेरापंथ सभा भवन का उद्घाटन —** बेंगलोर के उपनगर यशवंतपुर के नवीनीकृत सभा भवन के उद्घाटन के अवसर पर साध्वीश्री कुंथुश्रीजी ने यशवंतपुर तेरापंथ समाज को प्रेरणा देते हुए फरमाया कि इस नवीनीकृत भवन में साधना, आराधना, उपासना का क्रम व ज्ञानशाला, प्रेक्षाध्यान का उपक्रम निरंतर चलना चाहिए। जिससे जीवन अध्यात्म से अनुप्राणित बने।

- सहवर्तिनी साध्वीवृंद ने गुरु निष्ठा की पराकाष्ठा का जिक्र करते हुए श्रम व सेवा को सफलता का सूत्र बताया।
- महासभा के सहमंत्री श्री भूपेन्द्र कुमार मूथा ने यशवंतपुर श्रावक समाज की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि जहां संगठन है वहीं ऐसा विशाल भवन खड़ा किया जा सकता है। मारवाड़ जंक्शन के विधायक श्री केसाराम चौधरी ने प्रफुल्लमना कहा कि जीवन में ऐसा काम करके जाएं कि जाने के बाद लोग याद करें। इसी क्रम में तेयुप राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री कैलाश बोराणा ने भी अपने समीचीन विचार प्रस्तुत किये।
- समारोह की अध्यक्षता कर रहे तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने कहा कि जो व्यक्ति धर्मसंघ का कार्य करता है वह गौरवशाली होता है। हमेशा अपने क्षेत्र के विकास की ओर ध्यान देना चाहिए।
- कांग्रेस प्रवक्ता श्री अमृतलाल भंसाली व तेरापंथ प्रोफेशनल फॉरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय धारीवाल ने युवाओं को धर्म से जोड़ें और धर्म को आगे बढ़ाएं, ऐसी शुभकामना अभिव्यक्ति दी। मल्लेश्वरम् के विधायक श्री अश्वत नारायण, राजराजेश्वरीनगर के विधायक श्री मुनिरत्नम्, पूर्व उद्घाटनकर्ता श्री मीठालाल मूथा, सभा उपाध्यक्ष श्री प्रकाश बाबेल सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों की शुभ भावनायें बधाई के रूप में यशवंतपुर समाज का उत्साहवर्धन करने में योगभूत बनीं।
- श्री मूलचन्द नाहर ने केन्द्रीय समाचारों की अवगति दी। निर्माण संयोजक श्री विमल पितलीया ने अपने अनुभवों की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर विसर्जनकर्ताओं, कार्यकर्ताओं व अतिथिगण का सम्मान सभा द्वारा किया गया।
- इससे पहले भवन के उद्घाटनकर्ता श्री कन्हैयालाल महावीरचन्द गन्ना ने जैन विधि से फीता खोल कर उद्घाटन किया। मुमुक्षु खुश्बु व ज्ञानशाला की बालिकाओं ने मंगलाचरण कर कार्यक्रम को मंगल परमाणुओं से अनुप्राणित किया। सभाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल गन्ना ने स्वागत किया। सभा मंत्री श्री गौतमचन्द मूथा ने अतिथियों का परिचय एवं भवन निर्माण की जानकारी दी। श्री सुरेश बरड़िया ने आभार व्यक्त किया जबकि सुंदर व समयबद्ध संचालन श्री मदन बरड़िया ने किया। समारोह में बड़ी संख्या में श्रद्धालु समाज की उपस्थिति कार्यकर्ताओं की श्रम निष्ठा व संघ निष्ठा को सलाम कर रही थी।

★ **श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा - दिल्ली, अणुव्रत भवन**

आध्यात्मिक मिलन समारोह आयोजन - ''हेत परस्पर राखीजो'' आर्य भिक्षु की अंतिम वाणी हुई प्रभावक — साध्वीश्री यशोमतीजी ठाणा-4 व पूर्वांचल की सफल यात्रा कर दिल्ली पधारीं साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी ठाणा-4 का आध्यात्मिक मिलन भक्ति रसपगे वातावरण में समारोह पूर्वक आयोजित किया गया।

- इस अवसर साध्वीश्री यशोमतीजी ने गौरव के साथ तेरापंथ धर्मसंघ की भक्ति की श्रेष्ठ परम्परा का उल्लेख करते हुए स्मृतियों के वातायन से भक्ति, विनय, समर्पण व एकत्व भाव की ठंडी बयार से जनमेदिनी को भाव विभोर कर दिया।
- वात्सल्य भरे स्नेहिल परमिलों से अपनी झोली भरते हुए बड़े अहोभाग्य के साथ साध्वीश्री त्रिशलाकुमारजी ने अनन्य समर्पण भाव के साथ साध्वीश्री यशोमतीजी को पां. शिक्षण संस्था के पांच रत्नों में से एक रत्न की संज्ञा देते हुए उनके उन्नत संयम पर्याय से प्रेरणा लेने की बात कही एवं दिल्लीवासियों को आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष में कम से कम 100 की संख्या से उपासक श्रेणी को वर्धापित करने की बलवती प्रेरणा प्रदान की।

- सहवर्तिनी साध्वीवृंद एवं समणी कुसुमप्रज्ञाजी की सुमधुर गीत व भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने वातावरण को और अधिक अध्यात्ममय बना दिया।
- शाहदरा सभा मंत्री श्री सुभाष सेठिया, सुप्रीम कोर्ट वकील श्री हरीश आंचलिया, आई. एस. श्री के. सी.जैन, दिल्ली सभाध्यक्ष श्री के. एल. पटावरी, सहित संघीय संस्थाओं की ओर से भावभीना स्वागत किया गया।
- कार्यक्रम का कुशल संचालन दिल्ली सभा के मंत्री श्री सुखराज सेठिया ने किया।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा - सिलीगुड़ी

रास्ता सेवा - संतियों के गतिमान चरण न्यास के साथ कर्म निर्जरा का पाया अनूठा लाभ — साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी ठाणा-5 के सिलीगुड़ी के सफल चातुर्मास के पश्चात् परमाराध्य गुरुदेव के आज्ञानुवर्तन में सिलीगुड़ी से जयपुर तक 1800 कि. मी. से भी ज्यादा रास्ते की सेवा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिलीगुड़ी द्वारा गुरुदेव के पुण्य प्रताप से व श्रावक समाज के संकल्पबद्ध सहयोग से सानन्द सम्पन्न हुई जिसका आत्मतोष सेवार्थी भाई-बहिनों के प्रफुल्लित मुखमंडल पर छलक रहा था।

- 30 नवम्बर से 15 मई, 2013 तक साढ़े पांच महीनें की रास्ते की सेवा में जिन क्षेत्रों की संस्थाओं से सहयोग प्राप्त हुआ उनमें इस्लामपुर, किशनगंज, पूर्णिया, भागलपुर, पटना, बनारस, इलाहाबाद, मिर्जापुर, कानपुर व आगरा आदि क्षेत्रों के साथ-साथ श्री विमल बांठिया, कोलकाता व श्री प्रेम पाण्डे, सिलीगुड़ी तथा अन्य बहुत से सधार्मिक भाई-बहिनों से प्राप्त विशिष्ठ सहयोग संघ सेवा के प्रति जागरूकता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

★ **नये सभा भवन का शिलान्यास —** आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी के स्वर्णिम अवसर से जुड़ने का सौभाग्य कौन खोना चाहेगा ? श्रावक समाज व कार्यकर्ता सर्वात्मना समर्पण भाव से ठोस इतिहास रचने की दिशा में गतिशील है।

- इसी क्रम में परमाराध्य आचार्य श्री के पावन आशीर्वाद व समणी रतनप्रज्ञाजी एवं मुकुलप्रज्ञाजी के पावन सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा नये तेरापंथ सभा भवन का उपासक श्री सुरेन्द्र सेठिया, कोलकाता के मंत्रोच्चार से जैन संस्कार विधि से भवन के प्रथम खंड का शिलान्यास श्री जयचंदलाल लूणावत के करकमलों द्वारा किया गया।
- शिलान्यास कार्यक्रम के पूर्व अणुव्रत समिति, सिलीगुड़ी द्वारा प्रत्येक तेरापंथी परिवार को एक-एक माला भेजी गयी। उस माला को परिवार के सदस्यों ने नवकार मंत्र के जाप से मंत्रित किया। शिलान्यास वाले दिन पवित्र मंत्रित माला के मनकों को भवन की नींव में समर्पित कर दिया गया। मंत्र जाप के इस कार्यक्रम में 5100 माला का जाप हुआ और करीब 550 व्यक्तियों की उपस्थिति में 266 श्रावकों ने नींव में '**ॐ भिक्षु**' अंकित ईंट रखकर अपनी पूरी सहभागिता की घोषणा की।
- प्रथम चरण में 60,000 वर्ग फुट का निर्माण कार्य दिसम्बर, 2015 तक पूरा करने की योजना है।
- भवन के निर्माण में भवन निर्माण समिति के संयोजक श्री बाबूलाल लूणावत सहित वरिष्ठ श्रावक श्री सम्पतमल संचेती, श्री नवरतन पारख-सभाध्यक्ष, श्री कमल कुंडलिया, श्री अरविंद भंसाली, श्री मन्नालाल बैद, श्री उत्तमचन्द कोठारी, श्री कमल पुगलिया एवं श्री नरेन्द्र सिंघी- सभा मंत्री का सक्रिय सहयोग प्राप्त हो रहा है।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा - दक्षिण दिल्ली

मूल्यों का विकास : हमारी नीति के आस-पास — लाजपत नगर, दिल्ली में प्रवासित शासनश्री मुनिश्री सुखलालजी, मुनिश्री मोहजीतकुमारजी एवं मुनिश्री भव्यकुमारजी की पावन सन्निधि में एक विचार संगोष्ठी के अंतर्गत राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ उत्तरीय क्षेत्र संघ संचालक श्री बजरंग गुप्ता, जम्मू-कश्मीर पीपुल फ्रंट दिल्ली के संयोजक श्री महेन्द्र मेहता, जिला कार्यवाहक श्री मिथलेश, जिला संघ संचालक श्री पदम जैन के साथ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विशिष्ट कार्यकारी कार्यकर्ताओं ने अपने महत्वपूर्ण विचारों की प्रस्तुति सांस्कृतिक मूल्यों के विकास एवं ह्रास के महत्वपूर्ण पहलुओं पर दी। यह गोष्ठी मूल्य परक रही।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा - दिल्ली

भ्रमण का प्रभाव : जागा धर्म के प्रति लगाव — शासनश्री मुनिश्री सुखलालजी व उनके सहवर्ती संतगण के भारत की राजधानी दिल्ली प्रवेश के बाद एक वर्षीय परिभ्रमण का क्रम वृहद् स्तर पर रहा। चातुर्मास के पूर्व मुनिवरों द्वारा यमुना पार पूर्वी दिल्ली की समस्त कॉलोनियों एवं उपनगरों में परिभ्रमण कर जनजीवन को संयम, साधना, उपासना तथा संघीय प्रवृत्तियों के प्रति जागरूकता की प्रेरणा प्रदान की।

सभा संवाद

- चातुर्मास के बाद इस वार्षिक क्रम में दिल्ली का एन. सी. आर. क्षेत्र उत्तर प्रदेश का औद्योगिक शहर नोएडा के अनेक सेक्टरों में, हरियाणा का औद्योगिक व रिहायशी क्षेत्र फरीदाबाद एवं गुड़गांव के विभिन्न सेक्टरों में प्रवास एवं भिक्षाचरी तथा दक्षिण दिल्ली, उत्तरी दिल्ली, पश्चिमी दिल्ली के अधिकतम उपनगरों का स्पर्श करते हुए समाज में जागरण का बिगुल बजाया।
- 83 वर्षीय शासनश्री मुनिश्री सुखलालजी ने अपने विशिष्ट सहयोगी संतों के योग से तथा परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी की कृपा से तिन्नाणं-तारयाणं के लक्ष्य के साथ यात्रा का आगाज किया। अध्यात्म जागरण की दृष्टि से यह परिभ्रमण उपयोगी सिद्ध हुआ।

नव निर्वाचन

★ **अम्बिकापुर**

अध्यक्ष	:	श्री बच्छराज कोठारी
उपाध्यक्ष	:	श्री जेठमल सेठिया
		श्री पवन बोथरा
मंत्री	:	श्री हनुमानमल डागा
सहमंत्री	:	श्री प्रदीप लूणिया
कोषाध्यक्ष	:	श्री राजेन्द्र कुमार महनोत

★ **अहमदाबाद (पश्चिम)**

अध्यक्ष	:	श्री लक्ष्मीपत खटेड़
उपाध्यक्ष	:	श्री राजेन्द्र दुगड़
		श्री लूणकरण सांड
मंत्री	:	श्री राजेन्द्र पारख
सहमंत्री	:	श्री अनुज सेखानी
		श्री अपूर्व साह
कोषाध्यक्ष	:	श्री भंवरलाल जैन

★ **रायगंज**

अध्यक्ष	:	श्री मगनलाल सिंघी
उपाध्यक्ष	:	श्री सुन्दरलाल चोपड़ा
		श्री भीखमचन्द दुगड़
मंत्री	:	श्री वृद्धिचन्द लोढ़ा
सहमंत्री	:	श्री प्रमोद पटावरी
		श्री जुगराज नाहटा
कोषाध्यक्ष	:	श्री मानमल सांड

★ **रायपुर**

अध्यक्ष	:	श्री उत्तमचन्द गांधी
उपाध्यक्ष	:	श्री पूनमचन्द सेठिया
मंत्री	:	श्री प्रेमचन्द बुरड़
सहमंत्री	:	श्री सुनील जैन
कोषाध्यक्ष	:	श्री कनकचन्द जैन (छाजेड़)

गुरु कृपा व अनुशासन में फलते सेवा के आश्वासन का अभिनन्दन

निर्माण करना कठिन है,
ध्वंस तो कोई भी कर सकता है।
- आचार्य तुलसी

♦ संकल्प बने फलवान - एक आह्वान् ♦

♦ सौ दीक्षाओं की बात हमारे सामने है, इसलिए अब मेरे सामने बीदासर आ रहा है। मैंने लाडनूं चतुर्मास के बाद मृगसर कृष्णा दशमी, 28 नवम्बर 2013 को बीदासर में यथासंभव वृहत् दीक्षा समारोह करने का मन में एक संकल्प संजोया है।

♦ गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी वर्ष का वह संभवत: प्रमुखतम दीक्षा समारोह होगा। कितने ही मुमुक्षु उस अवसर पर साधुत्व को स्वीकार कर सकेंगे। हमारे साधु-साध्वियों को, समणश्रेणी को और श्रावक समाज को इस दिशा में प्रयास करना है। प्रयास हो भी रहा है। हमारे पास भेंटें आ रही हैं।

♦ उन साधु-साध्वियों और समणश्रेणी के सदस्यों के लिए हमारे मन में अहोभाव के साथ एक मंगलकामना प्रस्तुत करने का विचार हो रहा है, जो इस दिशा में श्रम कर रहे हैं और शासन की श्रीवृद्धि के लिए अपना योगदान दे रहे हैं।

♦ साधु-साध्वियों के कितने-कितने सिंघाड़े और समणियों के वर्ग अपने-अपने ढंग से अच्छा काम कर रहे हैं, उन्हें आगे और प्रयास करना है। सन् 2014 की कार्तिक शुक्ला द्वितीया के दिन की समाप्ति और तृतीया का सूर्योदय हो, उससे पहले-पहले सौ दीक्षाओं का टारगेट हमारा पूरा हो जाए, तदर्थ हमें प्रयास करना है। प्रयास करना हमारा काम है, निष्पत्ति क्या और कितनी होती है, केवली जानें।

♦ विवेकपूर्ण सत्पुरुषार्थ करना हमारा काम है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी का जन्म शताब्दी वर्ष सामने आ रहा है। यह एक अच्छा और सुन्दर अवसर है। किसी बड़े कार्य में निमित्त का भी योग होता है। कोई बड़ा काम कई बार यों ही नहीं होता, कोई निमित्त मिलता है तो काम हो जाता है। हमें भी आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी के रूप में एक निमित्त मिला है। उसी के आधार पर हमने यह सौ दीक्षाओं का प्रकल्प प्रस्तुत किया है।

- आचार्य महाश्रमण

अपने पौरुष को जगाए बिना
उज्ज्वल भविष्य की कामना नहीं की जा सकती।

- आचार्य तुलसी

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह 2013 - 2014

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष की महत्वपूर्ण परियोजना
‘अणुव्रत संकल्प रथ यात्रा’

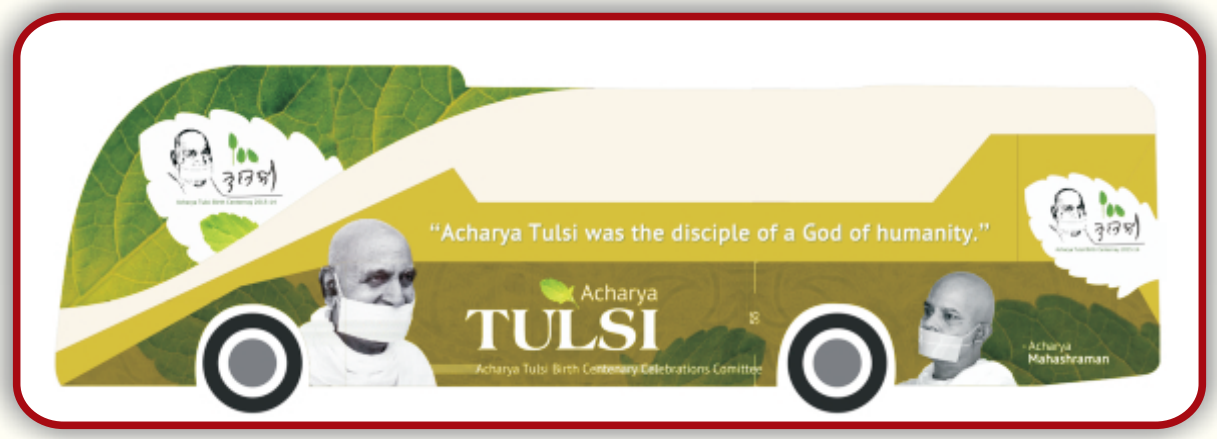

- हमारी कच्छ यात्रा में शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी स्वामी अकस्मात् प्रयाण को प्राप्त हो गए। वे आचार्य महाप्रज्ञ की सेवा में रहे व मेरे साथ भी जुड़े रहे। मैंने उनके व्यवहार को भी देखा, उनकी निष्ठा को भी देखा और उनकी वृत्तियों को परखा तो लगा कि बहुत अच्छे संत हैं। मेरे प्रति तो उनका पता नहीं कितना गहरा भक्तिभाव था। उनकी विनयनिष्ठा उल्लेखनीय थी। मेरे मन में उनके प्रति विशिष्ट भावना है। वे विशिष्ट संत थे, जल्दी चले गए। **मैं उन्हें आज शासन गौरव स्व. मुनि राजेन्द्रकुमारजी स्वामी के रूप में स्वीकार करता हूँ।**
- आचार्यप्रवर ने सभी साधु-साध्वियों को तीन माह तक पक्खी आदि पर दी जाने वाली आलोयणा के अतिरिक्त उष्ण आहार आदि वर्जन तथा विगय वर्जन से मुक्ति की बक्सीस की। जन्म दिवस व पट्टोत्सव इन दोनों कार्यक्रमों में गीत, कविता आदि प्रस्तुत करने वाले तीन वर्ष तक की संयम पर्याय वाले साधु-साध्वियों को पांच-पांच कल्याणक बक्सीस किए।
- आचार्यप्रवर ने अत्यन्त अनुग्रह कर मुमुक्षु निखिल पगारिया-कोल्हापुर, मुमुक्षु राजेन्द्र-छापर, मुमुक्षु सोमेश-कोलकाता को साधु प्रतिक्रमण सीखने का आदेश प्रदान किया।
- आचार्यप्रवर ने मुनि शुभंकरजी द्वारा समग्र उत्तराध्ययन सूत्र कंठस्थ करने पर इक्यावन कल्याणक बक्सीस किए।
- जसोल चतुर्मास में दीक्षित मुनि धवलकुमारजी, बालमुनि रम्यकुमारजी तथा असाडा में दीक्षित साध्वी प्रशान्तयशाजी को दसवेआलियं कंठस्थ करने के उपलक्ष्य में प्रोत्साहनस्वरूप इकतीस-इकतीस कल्याणक बक्सीस किए तथा लगभग ढाई माह में दसवेआलियं सीखने वाली साध्वी जगत्यशाजी को इक्यावन कल्याणक बक्सीस किए। पूज्यवर ने कच्छ यात्रा में सहगामी तीन वर्ष तक के संयम पर्याय वाले साधु-साध्वियों को तीन माह तक चाय, औषधि आदि की विगयवर्जन से मुक्ति की बक्सीस की।
- पूज्यप्रवर ने साध्वी हेमप्रभाजी को दसवेआलियं, साध्वी जगतयशाजी को उत्तराध्ययन के 17 अध्ययन कंठस्थ करने के उपलक्ष्य में अनुग्रहस्वरूप इकतीस-इकतीस कल्याणक बक्सीस किए तथा टापरा में रखे गए चारित्रात्माओं के निश्रित उपकरणों को समदड़ी तक साधन में लाने वाली साध्वी अमृतप्रभाजी, साध्वी स्मितप्रभाजी, साध्वी हेमप्रभाजी को इकतालीस-इकतालीस कल्याणक बक्सीस किए।
- मुनिश्री जिनेश जसोल, ये बहुत अच्छे साधु हैं। इनमें क्षेत्रों और श्रावकों को संभालने की जो लगन है, वह अपने आप में विशिष्ट है, एक उदाहरण के रूप में है। शासन के प्रति निष्ठा रखने वाले शासन के भक्त संत है।

> પરુ઼ લધ િઅક્ષણજ્ઞ અક્ષણજ્ઞ ઇંટ્રૂપળૂ ઇંળ
> ક્ષળબણ રુણશ્વ ળ લજ્ઞ ઇંફૂ ટળજ્ઞ
> ડ્બ્રુણપળૌં ઇંત વ્પમશ્નઠળ લૂઢ્ક ઘળપજ્ઞઉિ।
>
> **-आचार्य महाश्रमण**

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
Jain Swetambar Terapanthi Mahasabha

(ISO 9001 : 2008 Certified Organisation)
3, Portuguese Church Street, Kolkata - 700 001.
Phone : 033-22357956, 22343598, Fax : 033-22343666., e-mail : info@jstmahasabha.org

President's Office :
C/o. Maloo Constructions , # A-204/205, 2nd Floor, 25/26, Brigade Majestic, 1st Main, Gandhinagar, Bangalore - 560 009.
Phone : 080-2226 5737, Fax : 080-2226 4530, e-mail : hiralal.maloo@gmail.com

Printed at : श्री Offset Printers. Ph. : 080-6599 2695 Mob.: 98440 06655